ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

# मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास में छत्तीसगढ़ का योगदान (1956 ई. के विशेष संदर्भ में)

# Chhattisgarh's Contribution in Madhya Pradesh's Economic Development (With Special Reference To 1956 AD)

Paper Submission: 16/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

**रिंकी गिरी गोस्वामी**
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांश**

मध्यप्रदेश मठन के पश्चात् आर्थिक विकास की उन्नति एक अत्यंत ही नया अध्याय है। इसकी शुरूआत मध्यप्रदेश बनने के बाद ही हुई है। मध्यप्रदेश में विकास की अदभुत क्षमता और संभावनाएं है तथा इसी प्रकार छत्तीसगढ में भी अनेक भंड़ार खनिज संपत्ति जुटा दी गई है कि इस प्रदेश के भविष्य के विषय में क्या कहा जाए। कल के आर्थिक विकास का यह सबसे प्रमुख राज्य हो जायेगा, सन् 1956 में मध्यप्रदेश पुनर्गठन के दौरान शामिल हुए छत्तीसगढ़ अंचल में औद्योगिकरण की नींव तत्कालीन प्रथम मुख्यमंत्री पंडित रवि शंकर शुक्ल ने भिलाई इस्पात संयत्र के रूप में रखी थी। इस राज्य के रायपुर दुर्ग बिलासपुर एवं बस्तर से ही आर्थिक विकास अपने चरम उत्कर्ष पर है तथा अंपार संभावना भी इन्ही जिलों में विद्यमान है। इस शोध–पत्र में शोधार्थी द्वारा द्वितीय स्त्रोत के माध्यम से शोध–पत्र को लिखा गया है कि मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास में छत्तीसगढ़ ने किस प्रकार योगदान दिया है। इस शोध – पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

The progress of economic development after Madhya Pradesh reading is a very new chapter. It has started only after the formation of Madhya Pradesh. Madhya Pradesh has a great potential and potential for development and similarly, many stored mineral assets have been collected in Chhattisgarh as to what can be said about the future of this state. It will become the most prominent state of tomorrow's economic development, the foundation of industrialization in Chhattisgarh region, which was incorporated during the reorganization of Madhya Pradesh in 1956, was laid by Bhutai Steel Plant as the first Chief Minister Pandit Ravi Shankar Shukla. Economic development is at its peak from Raipur fort Bilaspur and Bastar of this state and the Ampar potential is also present in these districts. In this paper, the research paper has been written by the researcher through the second source, how Chhattisgarh has contributed to the economic development of Madhya Pradesh. Have tried to present through this paper.

**मुख्य शब्द :** मध्यप्रदेश का आर्थिक विकास, मध्यप्रदेश गठन, मध्यप्रदेश विभाजन।
Economic Development of Madhya Pradesh, Madhya Pradesh formation, Madhya Pradesh Partition.

**प्रस्तावना**

राज्य पुनर्गठन आयेाग की सिफारिश के परिणामस्वरूप अन्य राज्यों के साथ, दिनांक 1 नवम्बर 1956 को नये मध्यप्रदेश का गठन किया गया इसका निर्माण महाकोशल (17 जिले अब 18 जिले) सम्पूर्ण मध्य भारत राज्य (16 जिले) सम्पूर्ण विन्ध्यप्रदेश (8 जिले) भोपाल राज्य (2 जिले अब 3 जिले) तथा राजस्थान के कोटा जिले के सिरोज सब डिवीजन के सम्मेलन से हुआ है। नए मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रवि शंकर शुक्ल थे।

नया मध्यप्रदेश जैसे नये भारत का प्रतीत बन गया हो। देश के पुनः निर्माण की इस घड़ी में मध्यप्रदेश शायद सबसे महत्वपूर्ण क्रियात्मक रचना है भूतपूर्व मध्यप्रदेश के17 जिले, सुनेल क्षेत्र को छोड़कर पूरा मध्य भारत, विध्यप्रदेश भोपाल और राजस्थान के सिरोज को मिला कर यह प्रदेश गठा गया है। जो

इतिहास के लंबे दौर में अधिक समय तक एक साथ नहीं रहे। मौर्य काल, प्रियदर्शी अशोक, चकवर्ती विक्रमादित्य और कल्चुरी राजाओं के अधिपत्य में अनेक बार इनमें से अनेक हिस्से एक सूत्र में पिरोये जा चुके थे। भाषा और संस्कृति की दृष्टि से ये जुड़े हुए थे। विध्य और सतपुड़ा मुख्य पर्वत–श्रेणियॉ है गिर्दक्षेत्र, मालवा का पठार नर्मदा का कछार सतपुड़ा अंचल और छत्तीसगढ़ मैदान यहॉ के प्राकृतिक विभाग है। प्रकृति ने हर तरह से यहॉ खुले हाथों अपना वरदान लुटाया है। धरती फल वती है सूखा और कमी का नाम नहीं, मालवा नर्मदाघाटी और छत्तीसगढ़ के मैदान सच में अन्य भड़ार ही है जमीन के ऊपर एक तरफ जहॉ यह दौलत है, भीतर कोयले से लेकर हीरों तक अटूट खजाना गड़ा है। औद्योगिक सभ्यता की आधार शिला कोयले लोहा और सीमेंट यहॉ भरपूर है। इसी तरह बिलासपुर, कटनी, जबलपुर और रीवा में उत्तम बॉक्साइड क्षेत्र है मैगनीज भी बालाघाट, छिंदवाड़ा निमाड़ और झाबुआ से प्राप्त है इनके अतिरिक्त क्ले, फायर, बेराइट, तांबा शीशा अभ्रक, हीरा कोरडम की भी यहॉ की खदानों से भरा है। आज के औद्योगिक युग में इतनी सारी खनिज संपत्ति एक साथ जहॉ जुटा दी गई हो, उस प्रदेश के भविष्य के विषय में क्या कहा जाए। कल के उद्योग प्रधान भारत का यह सबसे प्रमुख उद्योग हो जायेगा। तथा मध्यप्रदेश में शिवपुरी में कागज, उज्जैन में एक बड़ी तेल मिल और अन्य उद्योग के लिये प्रारंभिक कदम उठाये जा चुके है।

मध्यप्रदेश में विकास की अदभुत क्षमता और संभावनाएं है हम पर प्रकृति इतनी कृपावत है कि मानों विकास और प्रगति के विभिन्न साधन मुक्त हस्त से लुटाने को तैयार बैठी हो। यदि हमारे यहॉ अत्यंत उपजाऊ और सब प्रकार की फसले देने वाली उर्वरा भूमि है तो उसके कण–कण को सीचने के लिए बड़ी–बड़ी नदियों के रूप में अथाह जल स्त्रोत भी उपलब्ध है। यदि प्रदेश में विस्तृत मूल्यवान संपदा है तो उसी धरती के भीतर बहुमूल्य खनिज भण्ड़ार भरा पड़ा है। मध्यप्रदेश की आर्थिक उन्नति एक अत्यंत ही नया अध्याय हैं इसकी शुरूआत मध्यप्रदेश बनने के बाद ही हुई है इस राज्य में मध्यभारत भोपाल स्टेट व पुराने मध्यप्रदेश के जो हिस्से शामिल किए गए वे उद्योग की दृष्टि से उन्नत नहीं थे। वैसे कुछ राज्यों में जैसे होल्कर स्टेट, ग्वालियर स्टेट, भोपाल स्टेट में कपड़ा मिले, आइन मिले, जीगिंग की फैक्टरी थी लेकिन इन मिलों के अलावा उद्योग नगण्य थे और ये कपड़ा मिल भी स्टेट का सख्यण मिलने के कारण उद्योगपत्तियों ने स्थापित की थी।

इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि किस प्रकार मध्यप्रदेश अपने गठन के उपरान्त लगातार आर्थिक प्रगति के पथ पर प्रगति कर रहा है।

**विषयवस्तु**

हमारे देश ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक संदृढता की दिशा में जो प्रगति के कदम बढ़ाये है। उनके स्पष्ट परिणाम आज तो सामने आ ही रहे है। कल की मजबूती उनका महत्व और भी अधिक स्पष्ट कर देगा। देश की स्वाधीनता के बाद उसके सर्वागीण विकास के लिए जो पहली पंचवर्षीय योजना बनी उसकी सफल कार्यन्विति ने और भी स्पष्ट चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। जिससे भविष्य के निर्माण में निश्चय ही अधिक उत्साह से जुटा जा सकेगा। प्रथम पंचवर्षीय योजना का ही यह परिणाम था कि इस अवधि में राष्ट्रीय आय में 18 प्रतिशत वृद्धि हुई, आर्थिक उत्पादन 25 से 30 प्रतिशत बढ़ा जनता के हाथों प्रचलित रूपये की मात्रा में 10 प्रतिशत वृद्धि हुई तथा थोक कीमतों में 13 प्रतिशत और श्रमिक जीवन – निर्वाह – व्यय की निर्देशिका में 5 प्रतिशत की कमी हुई है। योजना वृद्धि में केन्द्रीय और राज्य–सरकारों के बजट में चार सौ करोड़ का घाटा रहा, जिसका स्पष्ट अर्थ है कि जनाधिकारी विकास कार्यों को सम्पन्न करने के लिये सरकार ने ऋण तक लिए किन्तु ऋण प्राप्त करने में सरकारों को किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई। प्रथम पंचवर्षीय योजना वृद्धि का अन्तिम वर्ष सन् 1955–56 होने के कारण इस वर्ष का महत्व और भी अधिक है इस वर्ष पूंजी–बाजार की स्थिति मजबूत ही नहीं प्रस्तुत उत्साहद्रढ रही है। शेयरों की कीमतों में 6 प्रतिशत वृद्धि हुई जिससे यह स्पष्ट है कि लोग अपने देश के आर्थिक विकास के प्रति न केवल आशावादी ही है। बल्कि पूर्व विश्वास भी रखते है। हमारे देश का विदेशी व्यपार भी बढ़ रहा है। जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि देश का आर्थिक विकास प्रगति पर है।[1]

मध्यप्रदेश की भारत का एक प्रवर्तक उद्योग प्रारंभ करने का श्रेय प्राप्त है यह है भारत में अखबारी कागज–उत्पादन करने के प्रथम कारखाने नेपा मिल की स्थापना 26 अप्रैल 1956 को प्रधान मंत्री पं. नेहरू के कर–कमलों द्वारा इसका औपचारिक उदघाटन सम्पन्न हुआ और इस योजना ने मध्यप्रदेश के औद्योगिक मानचित्र में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। इस विशाल कारखाने की मशीने चालू होते ही एक ऐसी प्रक्रिया का श्री गणेश हुआ जो भारत की अखबारी कागज संबंधी एक तिहाई आवश्यकताओं की पूर्ति करेगी भारत में अखबारी कागज के उत्पादन के इतिहास में यह एक महान प्रगति सूचक घटना है नेपा मिल मध्यप्रदेश – सरकार की पंचवर्षीय योजना का एक अंग है।[2]

छत्तीसगढ खनिज की दृष्टि से संपन्न प्रदेश है यहॉ लोहा, कोयला, टिन बावसाइड, लाईन स्टोन के अलावा हीरा और सोने की खदान है। सन् 1956 में मध्यप्रदेश पुनर्गठन के दौरान शामिल हुए छत्तीसगढ अंचल में औद्योगीकिकरण की नीवं तत्कालीन प्रथम मुख्यमंत्री पंडित रवि शंकर शुक्ल ने भिलाई इस्पात संयंत्र के रूप में रखी थी भिलाई स्टील प्लांट कोयले की प्रचुरता के कारण नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन के बिजली संयंत्र एल्युमिनियम उद्योग बाल्कों और फिर उसके बाद सीमेंट कम्पनियों ने राज्य को औद्योगिक क्षेत्र में स्थापित कर दिया।[3]

भारी उद्योग की स्थापना भिलाई लौह इस्पात उद्योग यहॉ 20 अप्रैल 1957 को प्रारंभ हुई। इसके पश्चात् उसके सहायक तथा गौण उद्योगों का जाल बिछ गया।[4] मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास निगम की स्थापना 1965 में की गयी। इसका प्रमुख लक्ष्य औद्योगिक प्रोत्साहन तथा अंद्योसंरचना की सुविधाएँ प्रदान करना था।[5]

इस राज्य के रायपुर दुर्ग बिलासपुर एवं बस्तर से ही औद्योगिक विकास अपने चरम उत्कर्ष पर है तथा अपार संभावना भी इन्हीं जिलों में विधमान है दुर्ग जिले में स्थापित भिलाई इस्पात सयंत्र की प्रारम्भिक क्षमता केवल 10 लाख टन थी जो वर्तमान में 40 लाख टन से भी अधिक हो चुकी है। वर्ष 98–99 में अविभजित मध्यप्रदेश के विकास में छत्तीसगढ़ का योगदान अभूतपूर्व या छत्तीसगढ़ के भूगर्भ में अन्तनिर्हित अनूक खनिजों के दोहन के लिए लगभग 200 वृद्ध एवं मध्यम श्रेणी के उद्योग की स्थापना हुई है इन उद्योगों की सफलता से छत्तीसगढ़ का कार्याकल्प हो जाएगा।

छत्तीसगढ़ की वृहत्तम लौह इकाई की स्थापना के लिए सोवियत यूनियन से सहायता मिली थी। इसकी स्थापना 1955 में हुई। यह इकाई भिलाई में 4:3 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। यह शिवनाथ तथा खारून नामक नदियों का जलविद विभाजन क्षेत्र है। लौह अयस्क की खदाने चियली, दल्ली, राजहरा, अरी डोगरी, कोकन तथा झरनदल्ली में है। यहॉ उत्खन्न रूसी मशीनों से होती है। उत्खन्न का कार्य 1958–1966 के बीच विकसित किया गया।[6]

श्री गुमारता ने 9 फरवरी को रायपुर में औद्योगिक संस्थान का शिलान्यास किया जो छोटे उद्योगों की स्थापना और विकास के लिए केन्द्र के रूप में काम करेगा। बारह लाख रूपये की कुल लागत से आरम्भ इस औद्योगिक संस्थान का विस्तार दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में 180 एकड़ के कुल क्षेत्र पर किया जाएगा।[7]

क्षेत्र का विकास 1958–56 में भिलाई स्टील प्लाट के स्थापन से आरम्भ हुआ। इसके बाद भिलाई रायपुर तथा दुर्ग में इस्ट्रियन स्टैंटस में अनेक छोटे–बड़े विविध उद्योग स्थापित हुए। भिलाई में राज्य शासन का कृषि उपकरण बनाने का उद्योग 1952 में स्थापित हुआ था। निजी क्षेत्र में दुर्ग जिले कुम्हारी में गैस उर्वरक रोलिंग मिल स्ट्रील फाउन्ड्री जामुल में सीमेन्ट के उद्योग विकसित हुए। यहॉ धातुओं उद्योगों के अतिरिक्त खाध, तेल एवं रसायन उद्योग स्थापित हुए। दूसरी ओर रायपुर जो कृषि मंड़ी भी थी। चावल के उद्योग का महत्वपूर्ण केन्द्र हो गया। यहॉ मैदा मिल खाद तेल के कारखाने जूट एवं धातु उद्योग की कई इकाइयॉ स्थापित हुई। साथ ही तिलदा तथा माण्डर में सीमेन्ट के भी कारखाने लगाए गये। राजनाद गॉव में सूती कपड़े का उद्योग विकसित हुआ है। रायपुर दुर्ग राजनाद गॉव में 1978–79 में क्रमशः 1862–2041 तथा लधु उद्योग 500 स्थापित है जिनमें 9805–8969 तथा 2361 व्यक्ति कार्यरत थे।[8]

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में इस्पात उद्योग को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है भारत सरकार द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार देश की विकास योजनाओं के लिए सन् 1960 तक हमें 45 लाख टन तैयार इस्पात की वस्तुओं की आवश्यकता होगी। पर देश में विकास कार्यों की प्रगति को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है। कि देश की आवश्यकता निर्धारित लक्ष्य से भी अधिक होगी। इस समय जो उद्योग इस क्षेत्र में कार्यशील थे उनसे केवल 24 लाख टन तैयार इस्पात की और आवश्यकता पड़ती है इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय सरकार ने देश में तीन इस्पात के कारखाने खोलने का निर्णय किया है ये तीन कारखाने क्रमशः भिलाई (म.प्र.) रूरकेला (उडीसा) एवं दुर्गापुर (पश्चिमी बंगाल) में स्थापित हो रहे है। उपयुक्त तीनों कारखाने देश की बढ़ती हुई इस्पात की मांग की पूर्ति करेंगे। इस प्रकार हम इन्हें राष्ट्र–निर्माण के भावी आधार–स्तंभ की संज्ञा भी दे सकते है। भिलाई एवं उसके आसपास का क्षेत्र इस्पात उद्योग की स्थापना के लिए ऐसी सुविधाऍ प्रदान करता है कि सहज ही यहॉ पर यह उद्योग स्थापित किया जा सकता है। मध्यप्रदेश में इस्पात उद्योग की कहानी प्रारंभ होती है सन् 1882 से जब देश के महान उद्योगपति श्री जमशेदजी टाटा ने चंदा में लोहा का कारखाना स्थापित करने की इच्छा प्रकट की थी। उन्होंने इस क्षेत्र का पूर्ण रूप से सर्वेक्षण किया तथा इस क्षेत्र में भूगर्भित लोहे कोयले एवं मैग्नीज के विशाल भण्डार ने उन्हें यहॉ पर इस्पात उद्योग प्रारंभ करने को प्रेरित किया।[9]

यह सच है कि आजादी के पूर्व और उसके बाद के कुछ वर्षों तक प्रदेश में औद्योगिक गतिविधियॉ खनिज संसाधनों प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के उपरान्त भी उत्साहजनक नहीं रही फिर भी प्रदेश ने उपलब्ध संसाधनों का दोहन कर औद्योगिकीकरण की दिशा में जो ख्याति अर्जित की है उसी का परिणाम है कि अब राज्य देश के सातवे स्थान पर पहुॅच गया है। औद्योगिकीकरण के प्रथम चरण में बड़े उद्योगों को गति प्रदान की गई जिसके तहत राज्य में सार्वजनिक उपक्रम में कई कारखाने स्थापित किए गए जिनसे प्रमुख है भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स भोपाल, भारत एल्युमीनियम कम्पनी कोरबा (अब छत्तीसगढ़) स्टील प्लांट भिलाई (छत्तीसगढ़) नेशनल पेपर मिल नेपानगर, खण्डवा, मलाज खण्ड तांबा संयंत्र बालाघाट तथा ग्रेआयरन फाउन्ड्री जबलपुर आदि प्रमुख है। इसी तरह औद्योगिकीकरण के दूसरे चरण में निजी क्षेत्र के बड़े मध्यम एवं छोटे उद्योगों का तीव्रगति से उद्धार किया गया कई उपक्रम छठवें दशक के प्रारंभ में स्थापित किए गए।[10] जगदलपुर में अगस्त 1967 से कोसा कताई तथा बुनाई केन्द्र चालू किया गया। इस केन्द्र में 17 करधे लगाये गये है। कोसा का धागा तैयार करने व वस्त्र बुनने के कार्य में इस केन्द्र में लगभग 95 व्यक्ति कार्य कर रहे है। यहॉ प्रतिमाह लगभग 100 किलो ग्राम धागा तैयार हो जाता है।[11]

नन्हा सा निर्जन कोरबा जिसकी जिन्दगी कल तक कोयले की खानो के दोहन तक सीमित थी धीरे–धीरे आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र होता जा रहा है तथा निकट भविष्य में ही वह एक निर्माण व श्रम का तीर्थ हो जावेगा। कोरबा में बड़ी शीघ्रता से कल कारखानों का जाल बिछ रहा है वहॉ यांत्रिक कला नये आयामों में रोमांचक चमत्कार दिखा रही है। भीम काय मशीनों की गूंज से जहां दिन–भर आसमान थरथराता रहता है। वही मजदूरों के हाथ इस क्षेत्र को आर्थिक विकास के नवशे पर शेष स्थान दिलाने की दिशा में अपने कौशल के प्रदर्शन में लगे है। श्रम के इन संजीव हाथों की काली–कलूटी भूमि को समृद्धि के नूतन परिधान पहिना दिये है कितनी ही प्रकार की "कलों" का काफिला यहां देखते ही बनता है। कोरबा की रत्नगर्भा धरती नवभारत में

आर्थिक प्रसिद्धि के शिखर की ओर अग्रसर हो उठी है और वह दिन दूर नहीं जब भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण एशिया में एक प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्र के रूप में वह जानी व पहचानी जाने लगेगी। समृद्धि की सुनहरी मंजिलों की ओर उठे इसके कदम राह की समस्त बाधाओं को संकल्पों के सम्बल पाकर पार करने में निश्चय ही सफल होगे। इस भविष्य का संकेत दे रही है–कोरबा की धरती पर उठती हुई "बाल्कों" की विविध स्थापनाये। इन स्थापनाओं के आंचल में जन्म ले रही है। एक महत्वकांक्षी योजना जिसे हमारे योजना निर्माताओं ने "भारत अल्युमीनियम" का नाम दिया है।[12]

इस प्रकार से छत्तीसगढ़ में निरन्तर आर्थिक प्रगति कर मध्य प्रदेश का विकास कर रहा है।

**निष्कर्ष**

इस प्रकार हम देखते है। कि मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास में छत्तीसगढ़ का विशेष योगदान दिया तथा वरन् नये–नये कई उद्योग आरम्भ भी किये गये। उद्योग संचालनालय के प्रयत्नों से वर्तमान में ऐसे उद्योगों को भी प्रोत्साहित किया है। जिसके जरिये इस्पात कारखानों की मांग की पूर्ति यह उद्योग आसानी से कर सके। छत्तीसगढ़ राज्य में खनिज सम्पदा की भी भरमार है तथा छोटे तथा माध्यम उद्योगों का भी विकास हो रहा है। इस प्रकार यदि सरकार एवं पब्लिक सेक्टर द्वारा व्यापक प्रयत्न किये जाये तो छत्तीसगढ़ का क्षेत्र एक दिन देश में औद्योगिक दृष्टि से विकसित क्षेत्रों में से एक कहलाने का गौरव प्राप्त कर लेगा यहॉ विकास की संभावना व्यापक है प्राकृतिक साधन पर्याप्त है केवल आवश्यकता है धन, तकनीकी मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन की यदि ये सुलभ हो जाये तो निश्चय ही यह क्षेत्र आर्थिक विकास में अग्रणी हो जायेगा तथा मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास में अपना योगदान देगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. *मध्यप्रदेश संदेश जुलाई–दिसम्बर 1956, साप्ताहिक समीक्षा – श्री मधुकर पृष्ठ–3*
2. *मध्यप्रदेश संदेश जुलाई–दिसम्बर 1956, पृष्ठ – 76*
3. *छत्तीसगढ़ कल और आज (तपेश जैन), प्रकाशक :– जनवाणी प्रकाशन प्रा.लि. 30/35–36 पब्लिशर्स स्ट्रील गली नं. 9 विश्वास नगर दिल्ली, ISBN–978–99–80628–17–2, पृष्ठ–81*
4. *समग्र छत्तीसगढ़, प्रकाशकः छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी पं. रविशंकर शुक्ल विद्यालय परिसर सामुदायिक भवन के सामने रायपुर, ISBN –978–93–823113–28–1, पृष्ठ–274*
5. *छत्तीसगढ़ ज्ञान कोष हीरा लाल शुक्ल, प्रकाशक : म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग बानगंगा भोपाल म.प्र. संस्करण – द्वितीय 2004, पृष्ठ–70*
6. *छत्तीसगढ़ ज्ञान कोष हीरा लाल शुक्ल, प्रकाशक : म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग बानगंगा भोपाल म.प्र. संस्करण – द्वितीय 2004, पृष्ठ–71*
7. *मध्यप्रदेश सन्देश ग्वालियर शनिवार 28 फरवरी 1959 फाल्गुन 9 1880, पृष्ठ–23*
8. *मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, डॉ. प्रमीला कुमार (प्रोफेसर) भूगोल विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी) पृष्ठ–133*
9. *मध्यप्रदेश दर्शन 1957 आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्यप्रदेश ग्वालियर गर्वनमेन्ट रीजनल प्रसे 1957, पृष्ठ–104*
10. *मध्यप्रदेश आज और कल – रामभुवन सिंह कुशवाहा (2004–05 वार्षिकी) संपादक : सुभाष सिंह (एम.ए.), मुद्रक : प्रियंका आफसेट 25 ए प्रेस काम्प्लेक्स महाराणा प्रताप नगर भोपाल (भारत के समाचार पत्रों में पंजीयन द्वारा पंजीकृत), पृष्ठ–248*
11. *मध्यप्रदेश सन्देश ग्वालियर शनिवार 3 फरवरी 1968 : 14 माध 1881, अंक – 9 पृष्ठ–16*
12. *मध्यप्रदेश सन्देश ग्वालियर शनिवार 13 मई 1972 : 23 वैशाख 1894 अंक – 24, वर्ष 68, पृष्ठ–16*